ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-11* December (Supplementary Issue)-2017
Innovation The Research Concept

बच्चों के समाजीकरण में शिक्षा एवं शिक्षको की भूमिका

प्रिया कटारा
असिस्टेण्ट प्रोफेसर,
बी0एड0 विभाग,
एस0आर0के0 पी0जी0 कॉलेज,
फिरोजाबाद

सारांश

समाजीकरण का अर्थ उस प्रक्रिया से है जिसके द्वारा व्यक्ति अन्य व्यक्तियों से अन्तःक्रिया करता हुआ सामाजिक आदतों, विश्वासों, रीति–रिवाजों तथा परम्पराओं एवं अभिवृत्तियों को सीखता है अर्थात जिस प्रक्रिया द्वारा व्यक्ति के सामाजिक व्यक्तित्व का निर्माण होता है उसे समाजीकरण कहते हैं जिसके निर्माण में शिक्षा एवं शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति के विचारों एवं व्यवहार के परिवर्तन एवं परिमार्जन किया जा सकता है। चाहे वह औपचारिक हो अनौपचारिक हो या निरौपचारिक। विद्यालय न केवल औपचारिक शिक्षा प्रदान करने का एक साधन है बल्कि यह बच्चे के समाजीकरण की प्रक्रिया को तीव्र गति प्रदान करता है। जहाँ बालक शिक्षक के माध्यम से सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों को सीखता है। जहाँ सभी बालकों की भाषा एवं संस्कृति में भिन्नता होती है लेकिन उन सभी बच्चों को विद्यालयी समाज का सदस्य बनने हेतु उस विद्यालय के नियमों के अनुसार व्यवहार करना होता है और यह कार्य उनसे किसी दबाव में नहीं कराया जा सकता है। इस कार्य को पूर्ण कराने में शिक्षक की अहम् भूमिका होती है।

अध्यापकों का यह कर्तव्य होता है कि वे विद्यालय में समाज की सर्वमान्य भाषा एवं सर्वमान्य आचरण को ही स्थान दें। जिस बोली और व्यवहार को बच्चों ने बचपन से सीखा होता है उसमें परिवर्तन करना इतना आसान नहीं होता। इसके लिये उसे बच्चो के सामने एक अच्छा आदर्श प्रस्तुत करना होता है।

बच्चों के समाजीकरण को सही दिशा देने के लिये अध्यापकों को सभी बालकों के साथ बिना किसी भेदभाव के सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करना चाहिये। किसी भी जाति या धर्म की आलोचना नहीं करनी चाहिये। उन्हें विद्यालय में पाठाचारी तथा सहपाठाचारी क्रियाओं का आयोजन करना चाहिये। सामाजिक महत्व के बिन्दुओं को स्पष्ट करना चाहिये तथा विद्यालय का वातावरण लोकतन्त्रीय रखना चाहिये।

बच्चों के सामाजीकरण की प्रक्रिया में शिक्षक का सर्वप्रथम कार्य है कि बच्चों के माता–पिता से सम्पर्क स्थापित करके बालक की रुचियों एवं मनोवृत्तियों के विषय में जानकारी प्राप्त करें। शिक्षक को परिवार के सदस्यों को बच्चों के उचित सामाजीकरण के लिये तैयार भी करना चाहिये।

शिक्षा एवं शिक्षक के अभाव में हम बच्चों के उचित समाजीकरण की कल्पना भी नहीं कर सकते। बच्चें के समाजीकरण को सही दिशा शिक्षा एवं शिक्षक ही प्रदान कर सकते है। बालक के समाजीकरण में इन दोनों की ही महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

मुख्य शब्द : समाजीकरण, शिक्षक की भूमिका

प्रस्तावना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है वह समाज में रहता है और अपना विकास करता है समाज के बिना उसका विकास असंभव है।

बच्चा जब जन्म लेता है तो न ही वह सामाजिक होता है और न ही असामाजिक जैसे जैसे वह समाज के सम्पर्क में आता है। वैसे–वैसे उसमें सामाजिक या असामाजिक गुण विकसित होने लगते है। बच्चा जब संसार में आता है। तो वह समाज के रीतिरिवाजो, परम्पराओ से अज्ञान होता है। परन्तु जन्त लेते ही उसमें सामाजिक वातावरण का प्रभाव पड़ने लगता है। जैसे–जैसे बालक की आयु बढ़ती जाती है। इस प्रकार से वह सामाजिक रीतिरिवाजो, परम्पराओं आदि में परिपक्व हो जाता है। इस प्रकार से वह समाज की परम्पराओ और मान्यताओ को अपनाकर ही सामाजिक बनता है। इस प्रकार सामाजिक प्राणी बनने की प्रक्रिया ही समाजीकरण कहलाती है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. बालको को व्यवहार, कौशल एवं मूल्यों को सिखाना।

2. अपनी संस्कृति में निहित मान्यताओ तथा मानदंड़ो के विषय में अवगत कराना।
3. बच्चों को अनुशासन के महत्व का ज्ञान कराना।
4. व्यक्ति को सामाजिक भूमिका का ज्ञान कराना अर्थात् किस परिस्थिति में किसी व्यक्ति को कैसा व्यवहार करना चाहिये।
5. व्यक्ति के व्यवहार में अनुरूपता लाना अर्थात् समान परिस्थिति में समान व्यवहार करने के लिये प्रेरित करना।

समाजीकरण का अर्थ एवं परिभाषा

समाजीकरण वह प्रकिया है जिनके द्वारा व्यक्ति अपने समाज की जीवन शैली सीखता है और समाज में समायोजन करता है। मनुष्य जिस समाज के बीच जन्म लेता और रहता उसे उस समाज की भाषा रहन–सहन, खान–पान एवं आचरण की विधियां और रीति–रिवाज सीखने होते है। बिना उन्हे सीखे वह उस समाज में समायोजन नहीं कर सकता, उसका सदस्य नहीं बन सकता। वह यह सब कार्य एक दिन में नही सीखता, यह सब सीखने में उसे काफी समय लगता है। जन्म के कुछ दिन बाद वह अपने समाज की भाषा सीखने लगता है, रहन–सहन, खान–पान एवं आचरण की विधियां सीखने लगता है और तद्नुकूल आचरण की विधियां कर अपने समाज में समायोजन करता है। प्रायः मनुष्य एक साथ अनेक समाजो के सदस्य होते है उन्हे इनमे से किसी भी समाज में समायोजन करने के लिये उसकी भाषा और व्यवहार प्रतिमानो को सीखना होता है। इस पूरी प्रक्रिया को समाजीकरण कहा जाता है।

ड्रेवर के अनुसार–समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने सामाजिक पर्यावरण के साथ अनुकूलन करता है और इस प्रकार वह उस समाज का मान्य सहयोगी और कुशल सदस्य बनता है। समाजीकरण की प्रक्रिया को निम्नलिखित रूप में परिभाषित किया जा सकता है। समाजीकरण वह प्रक्रिया जिसमे व्यक्ति एवं व्यक्ति और व्यक्ति एवं समाज के बीच अन्तः क्रिया होती है और व्यक्ति समाज की भाषा रहन–सहन, खान–पान एवं आचरण की विधिया और रीति–रिवाज सीखता है। और इस प्रकार उस समाज में समायोजन करता है।

बच्चों के समाजीकरण में शिक्षा एवं शिक्षकों की भूमिका

शिक्षा मनुष्य के विचार एवं व्यवहार में परिवर्तन करने का मूल साधन है। शिक्षा को व्यवस्था की दृष्टि में तीन रूप है औपचारिक इनमें से औपचारिक शिक्षा की व्यवस्था विद्यालयों में भिन्न–भिन्न परिवारों, भिन्न–भिन्न जातियॉ और भिन्न– धर्मों के बच्चे आते है। यह भी हो सकता हे कि उनको संस्कृति भी भिन्न हो। परन्तु उन सबको विद्यालयी समाज का सदस्य नियमों के अनुसार आचरण करना होता है। इन सबके लिए उन्हें अपने ऊपर कुछ नियन्त्रण करना होता है और अपने दृष्टिकोण जो कुछ विस्तृत करना होता है। परन्तु यह सब कार्य जोर जबरदानी में नहीं कराया जा सकता, इसके लिए विद्यालयों के प्रधानाध्यापक एवं अध्यापकों को विशेष सावधानी बरतनी होती है।

अध्यापकों का सर्वप्रथम कर्तव्य यह है कि वे विद्यालयों में समाज को सर्वमान्य भाषा एवं सर्वमान्य आचरण की विधियों को ही स्थान दें। अध्यापक बच्चों के लिए आदर्श होते है, बच्चो उनका अनुकरण कर समाज की सर्वमान्य भाषा एवं आचरण की विधियों को सीखेगें। और विद्यालयी समाज में समायोजन करेगें।

परन्तु बच्चे अपने परिवारों में जिस बोली और व्यवहार को सीखकर आते है, उनमें सरलता में परिवर्तन व परिमार्जन नहीं किया जा सकता। इसके लिए अध्यापकों को बच्चों के साथ सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करना होता है और बड़े धैर्य का परिचय देना होता है। अध्यापकों को बच्चों के साथ बिना किसी भेदभाव को समान व्यवहार करना चाहिए और किसी भी दशा में, किसी भी जाति, धर्म, व्यवहार, आदि की आलोचना नहीं करना चाहिए, सभी बच्चों का उनमें विश्वास उत्पन्न होगा और तभी वे उनका अनुकरण करेंगे और तभी उनका समाजीकरण होगा।

विद्यालय के समस्त कार्यों को दो भागों में बाँटा जा सकता है, पाठ्यचारी और सहपाठ्यचारी। पाठ्यचारी क्रियायें केवल विषय ज्ञान तक ही सीमित नहीं होनी चाहिए अपितु उनके द्वारा अध्यापकों को सामाजिक महत्व के बिन्दुओं को स्पष्ट करना चाहिए, और यह सब कार्य इतने सहज भाव से करना चाहिए कि बच्चें समाज के सर्वमान्य नियमों का पालन करने की ओर स्वयं प्रवृत्त है। अध्यापकों को चाहिए कि वे शिक्षण की सामूहिक विधियों का अधिक से अधिक प्रयोग करें। इनमें बच्चों को एक–दूसरे से विचार विमर्श करना पड़ता है, तर्क करना पड़ता है और एक–दूसरे का सहयोग करना पड़ता है और इस सबसे उनका समाजीकरण होता है।

अध्यापकों का चाहिए कि वे विद्यालयों में सहपाठ्यचारी क्रियाओं का अधिक से अधिक आयोजन करें और उनकी रूपरेखा तैयार करने, उनका सम्पादन करने और उनका मूल्याकन करने में बच्चों का सक्रिय सहयोग लें। विद्यालयों में इस प्रकार की जो भी क्रियायें कराई जायें उनका सीधा सम्बन्ध समुदाय की क्रियाओं से होना चाहिऐ। जब बच्चे समुदाय की इन क्रियाओं में भाग लेंगे तो उन्हें नेतृत्व करने, नेता का अनुसरण करने, दूसरों के हित के लिए अपने हित का त्याग करने और सहयोग से कार्य सम्पादन करने का प्रशिक्षण प्राप्त होगा और वे समाज के माननीय सदस्य बनेंगे। इसी को तो समाजीकरण कहते है।

आज हमारे देश में लोकतन्त्र है और लोकतन्त्र तब तक सफल नही हो सकता जब तक वह मारे जीवन की विधि नही बन जाता।

बच्चों को लोकतन्त्रीय समाज में समायोजन करने का प्रशिक्षण विद्यालयों में मिलना चाहिए। इसके लिये आवश्यक है कि विद्यलयों का पर्यावरण पूर्णरूपेण लोकतन्त्रीय हो। अध्यापकों को सभी बच्चों के व्यक्तित्व का आदर करना चाहिए और जाति, लिंग, धर्म, आर्थिक स्तर, सामाजिक स्तर, आदि किसी भी आधार पर भेदभाव किए बिना उसके साथ समान व्यवहार करना चाहिए। विद्यालयों के प्रत्येक कार्य में बच्चों की सक्रिय भागीदारी भी आवश्यक होती है। उस स्थिति में ही हम बच्चों को लोकतन्त्रीय समाज में समायोजन करने योग्य बना सकते हैं।

लोकतन्त्र बच्चों पर समाज के व्यवहार प्रतिमानों को जबरन नही लादता, वह उनके स्वतन्त्र चिन्तन और स्वतन्त्र अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करता है। अतः आवश्यक है कि अध्यापक उपदेश देने के स्थान पर सामाजिक आचरण के आदर्श उपस्थित करें। वे अपने प्रधानाचार्य और साथी अध्यापकों को समादर करें बच्चों से बिना किसी भेद भाव के प्रेम और सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करें और बच्चों को इन व्यवहार प्रतिमानों को स्वयं स्वीकार करने की स्वतन्त्रता दें। ऐसे विद्यालय के बच्चों एक और अपने समाज की स्वीकृत विधियों को सीखकर अपने समाज में समायोजन करेंगे और दूसरी और समाज को आवश्यकतानुसार उचित स्वरूप प्रदान करेंगें।

अध्यापकों को कार्य विद्यालय की चार दीवारी तक सीमित नहीं है, वे समाज के आदर्श व्यक्ति माने जाते हैं, उन्हें विद्यालय के बाहर भी अपने आदर्श को उपस्थित करना होगा। किसी बच्चे के समाजीकरण में सबसे पहली भूमिका परिवार के सदस्यों को बच्चों को उचित समाजीकरण के लिऐ तैयार करना चाहिए। उन्हें अभिभावकों से भेंट कर उन्हें विद्यालय के सर्वमान्य नियमों से परिचित करा देना चाहिए, उन्हें जाति, धर्म, और व्यवसाय आदि की संकीर्णता से निकलकर वृहत् समाज के विद्यालयों में बच्चों के समाजीकरण की दिशा में समानता होगी।

निष्कर्ष

अतः यह कहा जा सकता है कि बच्चे समाजीकरण में शिक्षा एवं शिक्षक की बहुत महत्वपूर्णता है। इन दोनो के अभाव में बच्चे का समाजीकरण पूर्ण रूप से एवं सहा दिशा में नही हो सकता एक और जहाँ विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करते हुये बालको में बहुत से गुणों का विकास होता है। उन्हें अपने अधिकारो एवं कर्तव्यो का तथा अपनी संस्कृति का ज्ञान होता है। उनमें समायोजन की भावना विकसित होती है। वहीं दूसरी ओर शिक्षक भी बालक के समाजीकरण को प्रभावित करता है यदि शिक्षक के स्नेह, पक्षपात, बुरे व्यवहार, दण्ड आदि का बालको पर कुछ न कुछ प्रभाव पड़ता है। और उसका सामाजिक विकास मित्रता और सहयोग, सहानभूतियो में विश्वास करता है तो बच्चो में भी इन गुणों का विकास होता है। यदि शिक्षक छोटी–छोटी बातों पर बच्चों को दंड देता है तो उनके समाजीकरण में संकीर्णता आ जाती है।

इस प्रकार से यह स्पष्ट है कि बालक के समाजीकरण में शिक्षा एवं शिक्षक दोनों ही महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय आधार, लेखक डॉ0 सरोज सक्सैना, साहित्य प्रकाशन, आगरा, संस्करण–2011–12*
2. *शिक्षा के दर्शनिक तथा सामाजिक आधार, लेखक डॉ0 पूनम मदान, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा, संस्करण 2012–13*
3. *शिक्षा के दर्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, लेखक रमन बिहारी लाल, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, गंगोत्री शिवाजी रोड, मेरठ।*
4. *Philosophical, Sociological and Economic Bases of Education,Dr. J.S. Walia Ahim Paul Publishers*
5. *शिक्षा के अशैनिक एवं समाज शास्त्रीय आधार, लेखक प्रो0 गिरीश पचौरी, R. Lall Education Publisher, Meerut .*